कविताएं / मुक्तिबोध

(तारसप्तक के कवि गजानन माधव मुक्तिबोध हिन्दी साहित्य के प्रमुख कवि, आलोचक और निबन्धकार थे)

जब दुपहरी जिन्दगी पर...

जब दुपहरी जिन्दगी पर रोज़ सूरज
एक जॉबर-सा
बराबर रौब अपना गाँठता-सा है
कि रोज़ी छूटने का डर हमें
फटकारता-सा काम दिन का बाँटता-सा है
अचानक ही हमें बेखौफ़ करती तब
हमारी भूख की मुस्तैद आँखें ही
थका-सा दिल बहादुर रहनुमाई
पास पा के भी
बुझा-सा ही रहा इस जिन्दगी के कारख़ाने में
उभरता भी रहा पर बैठता भी तो रहा
बेरुह इस काले ज़माने में
जब दुपहरी जिन्दगी को रोज़ सूरज
जिन्न-सा पीछे पड़ा
रोज़ की इस राह पर
यों सुबह-शाम ख़याल आते हैं...
आगाह करते से हमें... ?
या बेराह करते से हमें ?
यह सुबह की धूल सुबह के इरादों-सी
सुनहली होकर हवा में ख्वाब लहराती
सिफ़त-से जिन्दगी में नई इज़्ज़त, आब लहराती
दिलों के गुम्बजों में
बन्द बासी हवाओं के बादलों को दूर करती-सी
सुबह की राह के केसरिया
गली का मुँह अचानक चूमती-सी है
कि पैरों में हमारे नई मस्ती झूमती-सी है
सुबह की राह पर हम सीखचों को भूल इठलाते
चले जाते मिलों में मदरसों में
फ़तह पाने के लिए
क्या फ़तह के ये ख़याल ख़याल हैं
क्या सिर्फ धोखा है ?...
सवाल है।

पता नहीं...

पता नहीं कब, कौन, कहाँ किस ओर मिले
किस साँझ मिले, किस सुबह मिले!!
यह राह जिन्दगी की
जिससे जिस जगह मिले
है ठीक वही, बस वही अहाते मेंहदी के
जिनके भीतर
है कोई घर
बाहर प्रसन्न पीली कनेर
बरगद ऊँचा, ज़मीन गीली
मन जिन्हें देख कल्पना करेगा जाने क्या!!
तब बैठ एक
गम्भीर वृक्ष के तले
टटोलो मन, जिससे जिस छोर मिले,
कर अपने-अपने तप्त अनुभवों की तुलना
घुलना मिलना

पूंजीवादी समाज के प्रति

इतने प्राण, इतने हाथ, इतनी बुद्धि
इतना ज्ञान, संस्कृति और अंत:शुद्धि
इतना दिव्य, इतना भव्य, इतनी शक्ति
यह सौंदर्य, वह वैचित्र्य, ईश्वर-भक्ति
इतना काव्य, इतने शब्द, इतने छंद ङ्क
जितना ढोंग, जितना भोग है निर्बंध
इतना गूढ़, इतना गाढ़, सुंदर-जाल ङ्क
केवल एक जलता सत्य देने टाल।
छोड़ो हाय, केवल घृणा और दुर्गंध
तेरी रेशमी वह शब्द-संस्कृति अंध
देती क्रोध मुझको, खूब जलता क्रोध
तेरे रक्त में भी सत्य का अवरोध
तेरे रक्त से भी घृणा आती तीव्र
तुझको देख मितली उमड़ आती शीघ्र
तेरे ह्रास में भी रोग-कृमि हैं उग्र
तेरा नाश तुझ पर कुद्ध, तुझ पर व्यग्र।
मेरी ज्वाल, जन की ज्वाल होकर एक
अपनी उष्णता में धो चलें अविवेक
तू है मरण, तू है रिक्त, तू है व्यर्थ
तेरा ध्वंस केवल एक तेरा अर्थ।

बहुत दिनों से

मैं बहुत दिनों से बहुत दिनों से
बहुत-बहुत सी बातें तुमसे चाह रहा था कहना
और कि साथ यों साथ-साथ
फिर बहना बहना बहना
मेघों की आवाज़ों से
कुहरे की भाषाओं से
रंगों के उद्भासों से ज्यों नभ का कोना-कोना
है बोल रहा धरती से
जी खोल रहा धरती से
त्यों चाह रहा कहना
उपमा संकेतों से
रूपक से, मौन प्रतीकों से

मैं बहुत दिनों से बहुत-बहुत-सी बातें
तुमसे चाह रहा था कहना!
जैसे मैदानों को आसमान,
कुहरे की मेघों की भाषा त्याग
बिचारा आसमान कुछ
रूप बदलकर रंग बदलकर कहे।

मुझे कदम-कदम पर

मुझे कदम-कदम पर
चौराहे मिलते हैं
बाहें फैलाए
एक पैर रखता हूँ
कि सौ राहें फूटतीं
मैं उन सब पर से गुजरना चाहता हूँ
बहुत अच्छे लगते हैं
उनके तजुर्बे और अपने सपने.
सब सच्चे लगते हैं
अजीब-सी अकुलाहट दिल में उभरती है
मैं कुछ गहरे में उतरना चाहता हूँ
जाने क्या मिल जाए

मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक पत्थर में
चमकता हीरा है
हर एक छाती में आत्मा अधीरा है
प्रत्येक सस्मित में विमल सदानीरा है
मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक वाणी में
महाकाव्य पीड़ा है
पलभर में मैं सबमें से गुजरना चाहता हूँ
इस तरह खुद को ही दिए-दिए फिरता हूँ
अजीब है जिंदगी
बेवकूफ बनने की खातिर ही
सब तरफ अपने को लिए-लिए फिरता हूँ
और यह देख-देख बडा मजा आता है
कि मैं ठगा जाता हूँ
हृदय में मेरे ही
प्रसन्नचित्त एक मूर्ख बैठा है
हंस-हंसकर अश्रुपूर्ण, मत्त हुआ जाता है
कि जगत स्वायत्त हुआ जाता है
कहानियां लेकर और
मुझको कुछ देकर ये चौराहे फैलते
जहां जरा खडे होकर
बातें कुछ करता हूँ
उपन्यास मिल जाते ।

अवनी बाघिन की हत्या का अम्बानी कनेक्शन

बाघिन अवनी की हत्या को केंद्र में रखते हुये वरिष्ठ पत्रकार प्रीतिश नंदी ने बहुत से तथ्यों का खुलासा किया है। हम-आप अनिल अंबानी को जब रॉफेलगेट के डिफाल्टर के रूप में चिन्हित कर रहे हैं इसी बीच अम्बानी और महाराष्ट्र सरकार के एक और घालमेल की कलई खुलती दिख रही है।

महाराष्ट्र का यवतमाल जिला बाघों के संरक्षण के लिये भी जाना जाता है। यहाँ के जंगल मे चूना, कोयला, डोलोमाइट जैसे खनिजों का भी भंडार है। महाराष्ट्र सरकार ने यवतमाल जिले का पांडरकावाड़ा जो बाघों का प्राकृतिक आवास है कि 500 हेक्टेयर जमीन मात्र 40 करोड़ रुपये में अनिल अंबानी को दे दी। अनिल अंबानी वहाँ सीमेंट कारखाना लगाने वाला था। इसीबीच उसे रॉफेल का ठिका मिल गया और उसने यह जमीन तत्काल दूसरे बिजनेस घराने को 4800 करोड़ रु में बेच दिया।

अवनी 6 वर्षीय बाघिन थी जो दो नन्हे शावकों की माँ थी। यह जगह उसका प्राकृतिक आवास था और कानूनी रूप से आरक्षित वन। पर अवनी नही जानती थी कि सीमेंट और पावर प्लांट उसके लिये मौत का वारंट है। अवनी की वजह से दोनो कम्पनियों के खुलने में समस्या आ रही थी। अत: महाराष्ट्र के वनमंत्री सुधीर मुनगंटीवार और कम्पनी के हाकिमों ने मिलकर उसके आदमखोर होने की कहानी गढ़ी जिसे स्थानीय लोगो की मदद से हैवे की तरह खड़ा किया गया। फिर प्रख्यात सूटर नबाब शफात अली खान की सेवाएं ली गयी। शफात अली और उसके बेटे ने रात के वक़्त अवनी को मार गिराया। लड़ाई अब मेनका गांधी बनाम मुनगंटीवार के बीच छिड़ा हुआ है और अम्बानी 4760 करोड़ समेटकर निकल चुका है।

आगे नंदी लिखते हैं कि सत्ता में बैठे लोग किस तरीके से जल, जंगल और जमीन औने-पौने दामों में अपने अजीजों पर लुटाते है और निरर्थक हिंसा का सहारा ले हमेशा त्रासदी खड़ी करते हैं।

मोदी, योगी, शाह को अरबी, फ़ारसी समर्पित!

दिनेशराय द्विवेदी

हम फारसी में आराम करते है ! कुछ गलत करने का अफसोस भी फारसी मे करते है ! गलती से किनारा भी फारसी मे करना पडता है ! हफ्ता ,जवान और दरोगा भी फारसी है और मुजरिम गिरफ्तार भी फारसी मे ही होता है ! और तो और दुकान और वहाँ मिलने वाला नमक भी फारस का ही है ! अब बहादुर और आवारा भी फारसी है और काश,खूबसूरत और शादी भी ! मुफ्त और जहर भी फारस से ही आया है !

अब अरब की सुनें ! शराब ,अमीर ,औरत ,इज्जत असर, किस्मत, खयाल, दुकान, जहाज, मतलब, तारीख, कीमत, इलाज, वकील, किताब, कालीन, मालिक, गरीब, मौत ,मदद ये सब अरब से ही हमारे हिंदुस्तान मे चले आये हैं ! ये सब फौरन खदेड दिये जाने चाहिये !

और जब फारसी और अरबी से हमारी दोस्ती नही तो तुर्की को क्यो बख्शा जाये ! आगा, आका, उजबक, उर्दू, कालीन, काबू, कैंची, कुली, कुर्की, चिक, चेचक, चमचा, चुगुल, चकमक, जाजिम, तमगा, तोप, तलाश, बेगम, बहादुर, मुगल, लफंगा, लाश, सौगात, सुराग ये सब भी दफा कर देने लायक है !

बदलने का दौर है ये ! जो कुछ हमारा नही वो सब कुछ बदल देने लायक है ! बदलने से ज्यादा जरूरी और कुछ भी नही ! आईये जरूरी काम मे लगें !

ऋषिपाल चौहान
चेयरमैन, जीवा पब्लिक स्कूल

शिक्षा के साथ-साथ चिंतन व मनन भी आवश्यक

समाज में प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह नर हो या नारी, राजा हो या रंक, प्रतिदिन किसी न किसी विशेष कार्य में लगे रहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति की एक अलग दुनिया होती है एवं प्रत्येक व्यक्ति का दृष्टिकोण भी अलग होता है। सभी के अपने निर्धारित कार्य हैं, जिसमें सभी समान रूप से योगदान दे रहे हैं। डाक्टर समाज की सेवा करता है, सैनिक रक्षा करता है, शिल्पी रचना करता है एवं अध्यापक समाज को शिक्षित करने का पुण्य कार्य करता है। सभी अपने कार्यों द्वारा समाज को सुखी व समृद्ध बनाना चाहते हैं। प्रत्येकव्यक्ति चाहता है कि उसके द्वारा सीखे गए कार्यों से समाज का उपकार हो इसलिए मानव जीवन में शिक्षा का बहुत महत्व है।

शिक्षा के भी चार अंग होते हैं पहला अध्यापन, एक अध्यापक अपना कार्य निष्ठा से करता है और छात्रों को शिक्षा व ज्ञान देता है। इसके उपरान्त छात्रों का कर्म है कि वे सिखाए गए ज्ञान को भली- भांति समझें और अपना आत्मविकास करें। दूसरा है मनन, सिखाए गए ज्ञान का मनन कर उसे क्रियाशील बनाएँ। मनन करने वाला छात्र अपने आप पर पूरा विश्वास रखता है व धैर्य से कार्य करता है। उसमें आत्म नियंत्रण होता है। तीसरा है चिंतन। चिंतन से तात्पर्य है किसी भी कार्य के लिए गहराई से सोचना, यदि कभी असफलताएँ हमें हमारे मार्ग से विचलित करने का प्रयास करती है तो उन असफलताओं की चिंता न करें, उन पर चिंतन करें कि उन्हें अपने मार्ग से कैसे हटाया जाए क्योंकि असफलता ही सफलता को जन्म देती है। चौथा अंग है उपयोग, निश्चित रूप से मनन एवं चिंतन का प्रभाव हमारे मस्तिष्क पर बहुत गहरा होता है और उसका परिणाम भी सुखद होता है। मनन व चिंतन के द्वारा हम अपनी बात सार्थक तरीके से दूसरे के समक्ष रख सकते हैं। हमारे द्वारा किए गए प्रयास पर चिंतन और मनन करने के उपरांत जो निष्कर्ष निकलता है वह यह है कि हम जो कुछ सीखते है उसका उपयोग अपने समाज के लिए कितना कर पाते हैं। यदि हमारे द्वारा किए गए कार्यों से समाज का कुछ हित होता है तो हमारे द्वारा अर्जित की गई शिक्षा वास्तव में सार्थक होगी।